हड़प्पा की सभ्यता

ध्यान दें –

- अंग्रेजी में बी.सी. (हिंदी में ई.पू.) का तात्पर्य 'बिफोर क्राइस्ट' (ईसा पूर्व) से है। कभी-कभी तिथियों से पहले ए.डी. (हिंदी में ई.) लिखा होता है। यह 'एनो डॉमिनी' नामक दो लैटिन शब्दों से बना है तथा इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से है। आजकल ए. डी. की जगह सी.ई. तथा बी.सी की जगह बी.सी.ई. का प्रयोग होता है। सी.ई. अक्षरों का प्रयोग 'कॉमन एरा' तथा बी.सी.ई. का 'बिफ़ोर कॉमन एरा' के लिए होता है। हम इन शब्दों का प्रयोग इसलिए करते हैं क्योंकि विश्व के अधिकांश देशों में अब 'कॉमन एरा' का प्रयोग सामान्य हो गया है। कभी-कभी अंग्रेजी के बी.पी अक्षरों का प्रयोग होता है, जिसका तात्पर्य 'बिफ़ोर प्रेजेंट' है।
- चोलिस्तान – भारत के थार रेगिस्तान से लगा हुआ पाकिस्तान का रेगिस्तानी क्षेत्र का नाम है।

- इस सभ्यता का नामकरण, हड़प्पा नामक स्थान, जहाँ यह संस्कृति पहली बार खोजी गई थी, के नाम पर किया गया है।
- इसका काल निर्धारण लगभग 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच किया गया है।
- विकसित हड़प्पा से पहले भी कई संस्कृतियाँ अस्तित्व में थीं जो अपनी विशिष्ट मृदभाण्ड शैली से संबद्ध थीं तथा इनमें कृषि, पशुपालन तथा कुछ शिल्पकारी के साक्ष्य भी मिलते हैं।
- हडप्पा में सेलखड़ी नामक पत्थर से मुहरों को बनाया जाता था

- इन मुहरों पर सामान्य रूप से जानवरों के चित्र तथा एक ऐसी लिपि के चिह्न उत्कीर्णित हैं जिन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
- हडप्पा के आवासों, मृदभाण्डों, आभूषणों, औज़ारों तथा मुहरों जैसे पुरातात्विक साक्ष्यों के माध्यम से बहुत जानकारी मिलती है।
- हड़प्पा का भोजन था – पेड़-पौधों से प्राप्त उत्पाद, जानवर, मछली आदि।
- हड़प्पा स्थलों से मिले अनाज के दानों में प्रमुख हैं – गेहूँ, जौ, दाल, सफ़ेद चना तथा तिल
- बाजरे के दाने गुजरात के स्थलों से प्राप्त हुए थे और चावल के दाने अपेक्षाकृत कम पाए गए हैं।
- हड़प्पा स्थलों से मिली जानवरों की हड्डियों में मवेशियों, भेड़, बकरी, भैंस तथा सूअर की हड्डियाँ शामिल हैं जिन्हें पालतू बनाया जा चुका था।
- इनके अतिरिक्त मछली और पक्षियों की हड्डियाँ भी मिली हैं।
- मुहरों पर वृषभ रेखांकन मिलता है और इस आधार पर पुरातत्वविद यह मानते हैं कि खेत जोतने के लिए बैलों का प्रयोग होता था।
- हल के प्रयोग के प्रमाण –
    - चोलिस्तान के कई स्थलों और बनावली (हरियाणा) से मिट्टी से बने हल के प्रतिरूप मिले हैं।
    - कालीबंगन (राजस्थान) नामक स्थान पर जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है जो आरंभिक हड़प्पा स्तरों से संबद्ध है। इस खेत में हल रेखाओं के दो समूह एक-दूसरे को समकोण पर काटते हुए विद्यमान थे जो दर्शाते हैं कि एक साथ दो अलग-अलग फ़सलें उगाई जाती थीं।

- अफ़गानिस्तान में शोर्तुघई नामक हड़प्पा स्थल से नहरों के कुछ अवशेष मिले हैं।
- पंजाब और सिंध में नहर के प्रमाण नहीं मिले हैं। जिसके को कारण हो सकते हैं .. पहला, प्राचीन नहरें बहुत पहले ही गाद से भर गई हों। दूसरा, यहाँ कुओं से प्राप्त पानी का प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता हो।
- धौलावीरा (गुजरात) में मिले जलाशयों का प्रमाण मिला है जिनका प्रयोग संभवत: कृषि के लिए जल संचयन हेतु किया जाता था।